जानता हूं

जानता हूं!
जानता हूं
बेमानी है इस वक़्त प्यार
जब हमें मौसम पिटे
मुहरों-सा चल रहा हो
रफ़्ता-रफ़्ता हज़ारों स्रोतों से
खिंचा हुआ आदमी का ख़ून
हर क्षण कराहता-चीखता हमें
पुकारता हुआ लगता है
मगर भाग्य-विधाता अधिनायक ने
नसों में बूंद-बूंद ज़हर उतार
एक समूची होनहार पीढ़ी को
बेकारी, अफ़ीम और हस्तमैथुन
के हवाले कर दिया है
अपने मकान की दीवारें
जासूस हो गई हैं
हमारे ख़िलाफ़
छतों से लटका कर रस्सियां
गिरीश फलसफ़े के मूड में कहता है,
'भीख मांगने से अच्छा है
पागल हो जाना
और सबसे बेहतर है, यार, ख़ुदकुशी'

यूं सारा-का-सारा भिखमंगा देश
पागल होने और खुदकुशी
करने के बीच तंग गली से
गुज़र रहा है.
हम सिर्फ़ नफ़रत करने के
काबिल रह गए हैं
आपस में अथवा इन उल्टी बहती हुई
रक्त पाई हवाओं से नफ़रत
जहां पत्नियां बिस्तरों की जरूरत हैं
और प्रेमिकाएं आरामदेह
बिस्तरों की तलाश
जहां मक्कार प्यार का
हलफनामा लिखते हैं
हत्यारे बांटते हैं अहिंसा और
सत्य के इश्तिहार.
पता नहीं कब लैला
शोहदों के ज़रिए
तुम्हें क़ब्र का रास्ता दिखा दे
मुस्कराहट का केंचुल फेंक दे
पता नहीं कब सांप चुभो दे
ज़हरीले दांत उसके मासूम जिस्म में

लुटेरों की दया
लुटे हुए समाज के प्यार में डूब कर
दान करती है महलों की साजिश
चलती है राष्ट्रप्रेम के नाम पर
ग़रीब झोपड़ियों की भूख से
धुंआती आग़
पिता की लिपे-पुते आंगन से
दाल मंडी के सूजाक-भरे कमरों तक
धुल चुकी है रिश्तों की पर्त-दर-पर्त
बाज़ार की स्याह रोशनी
संसद भवन और बूचड़खानों में
समान ढंग से घूमती है
वह जादू की छड़ी
जो हर क़ानून से बड़ी है
भाग्य-विधाता अधिनायक की
जय हो जय हो
चौतरफ़ा घूमती वह जादू की छड़ी
बलि के बकरों को कसाई
की जय बोलना सिखाती है
इन उलटा बहती हुई रक्तपायी
हवाओं के विरुद्ध
अविराम लड़ाई में साथ-साथ होने
और एक-दूसरे के ज़ख़्म पर पट्टियां
बांधने के अलावा जानता हूं
बेमानी है प्यार जब हमें मौसम पिटे
मुहरों-सा चल रहा हो!

-गोरख पांडेय

कौशव कांड : लचर शिक्षा व्यवस्था का परिणाम

फ़रीदाबाद (म.मो.) शिक्षा मंत्री स्मृति ईरानी जी, आपके कार्यालय से थोड़ी दूरी पर सफदरजंग अस्पताल है। वहां एक बच्चा तडफ़ रहा है। उसे जाकर देखिए। जानिए कि आखिर क्यों एक मां का लाडला जब घर से स्कूल जाता है तो अपने साथ एक कोका कोला की बोतल में पेट्रोल डाल कर ले जाता है और स्कूल के बाथरूम में जाकर खुद पर पेट्रोल डाल कर आग लगा लेता है। इस बच्चे का नाम कौशव है। जो देश की राजधानी से सटे फरीदाबाद के एक प्राइवेट स्कूल होली चाइल्ड में आठवीं कक्षा में पढ़ता है। 28 नवंबर को उसने ऐसा कदम उठाया कि जिसने भी सुना, उसके रौंगटे खड़े हो गए। वह 45 प्रतिशत जला हुआ है और सफदरजंग अस्पताल में भर्ती है। मंत्री जी, जाकर देखिए कि इस बच्चे ने उस संस्कृत विषय से डर कर यह कदम उठाया है, जिसे आप पूरे देश में लागू करना चाहती है। संस्कृत आपका प्रिय विषय हो सकता है, लेकिन शायद कौशव को यह विषय पसंद नहीं है। इसलिए उसकी संस्कृत टीचर ने कौशव को कहा था कि अपनी मां को बुलाकर लाना, लेकिन कौशव अपनी मां को परेशान नहीं करना चाहता था, इसलिए वह अपनी मां को बुलाकर नहीं लाया। एक दिन तो उसने छुट्टी कर ली, लेकिन दूसरे दिन उसने स्कूल आने के बाद इस घटना को अंजाम दिया। 14 साल के कौशव ने जो किया, उसके लिए कौन जिम्मेवार है और किसे सजा मिलनी चाहिए? यह काम तो सरकार ने पुलिस को सौंप रखा है, जो अभी तक चुप्पी साधे हुए है। पुलिस किसे दोषी ठहराएगी, अभी से यह कहना मुश्किल है, क्योंकि पुलिस किसी को दोषी ठहराने की बजाय अपनी जेब भरने में अधिक विश्वास रखती है।

लेकिन मंत्री जी, आप को इसकी गहन पड़ताल करनी चाहिए कि जिस शिक्षा व्यवस्था को आप बदलना चाहती है, उसमें कोई ऐसा खोट तो नहीं, जो कौशव जैसे बच्चे को आत्महत्या के लिए मजबूर कर रहा है। मंत्री जी, कौशव के बहाने ही सही प्राइवेट स्कूलों की जांच पड़ताल करिए, देखिए कि जो विषय पढ़ाए जा रहे हैं, उनके प्रति बच्चों में कितना लगाव है। केवल मंत्रालय में बैठकर आरएसएस का एजेंडा लागू करने के लिए संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाने से पहले कौशव से जाकर पूछिए कि उसे संस्कृत से डर तो नहीं लगता और लगता है तो क्यों लगता है? आपके अधीन काम कर रहे सीबीएसई ने वर्ष 2002 में एक आदेश जारी किए थे कि हर स्कूल में एक काउंसलर होना चाहिए, जो हर बच्चे की मानसिक स्थिति पर नजर रखेगा। पता कराइए कि कितने स्कूलों में ऐसे काउंसलर हैं अगर नहीं हैं तो शिक्षा का कारोबार कर रही इन दुकान के मालिकों के खिलाफ क्या कार्रवाई की गई या ये दुकानदार किन अधिकारियों की जेब गर्म करके अपनी दुकान चला रहे हैं। सरकारी स्कूलों को भट्ठा बैठ ही चुके हैं और मां-बाप के पास इन स्कूलों के पास जाने के अलावा कोई चारा नहीं बचा है, जिन्हें आप जैसे नेताओं को चुनावी चंदा भी देना है तो फिर व्यवस्था कैसे सुधरेगी? होना तो यह चाहिए कि स्कूल में काउंसलर ही नहीं, बल्कि हर टीचर को इतना ज्ञान होना चाहिए कि वह बच्चे को देखकर या उसके व्यवहार से यह अंदाजा लगा ले कि वह दिमागी तौर पर कितना मजबूत है। वह मानसिक तौर पर परेशान तो नहीं है। उसका पारिवारिक बैकग्राउंड कैसा है? पर यह तभी संभव है, जब एक टीचर के पास कम से कम बच्चों को पढ़ाने की जिम्मेवारी हो। आदर्श स्थिति तो यह है कि एक टीचर 28 बच्चों को पढ़ाए, लेकिन इन प्राइवेट स्कूलों में जाकर देखिए, हर क्लास में बच्चे ठसाठस भरे हुए दिखेंगे।

कौशव ऐसा बच्चा है, जिसके पिता बहुत छोटी उम्र में गुजर गए। मां ने बड़ी परेशानी में खुद को संभाला और अब उसे पढ़ा रही है। जिस नाना की अंगुली थाम कर बड़ा हुआ था, वह भी पिछले दिनों गुजर गए। इस छोटी उम्र में कौशव किस स्थिति से गुजर रहा था? इसकी जानकारी टीचर को होनी चाहिए थी। 14 साल के कौशव ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर कई सवाल उठाए हैं। उन पर मंथन की जरूरत है। मंत्री जी, आप शुरुआत करिए, कौशव के बहाने ही सही, ताकि फिर कोई कौशव ऐसा कदम न उठाये।

शराब का अवैध धंधा जोरो पर

करनाल : (धीरज शर्मा) करनाल सी एम सिटी में अवैध शराब तस्करी जोर शौर से चल रही है। एक्टिवा स्कूटी व मोटर बाईक पर अग्रेजी शराब तस्कर होम डिलीवरी कर शराब ठेकों से 50 रूपये प्रति बोतल कम रेट परअपनी सेवाये दे रहे है । कस्टमर को जो शराब की बोतल 250 रू में शराब के ठेके से मिलती है उसी शराब की बोतल को 200 रूपये में शराब तस्कर घर बैठे पहुँचा रहे है । ऐसे में मदिरा के शौकीन लोग ठेके पर शराब लेने की जगह घर बैठे मोबाईल फोन द्वारा आर्डर कर इस सेवा का लाभ उठा रहे है। नतीजन ठेको पर उमड़ने वाली भीड़ दिन प्रति दिन घटती जा रही है । इससे शराब ठेको के मालिक सकते में है और यह सोचने पर मजबूर है कि कहीं उन्होने शराब के ठेके छुडवा कर कोई गलती तो नही की क्योकि अन्दाजा लगाया जा रहा है कि इस गैर कानूनी तस्करी के चलते इस बार शराब के ठेकेदारों को भारी घाटा हो सकता है। क्योकि होम डिलीवरी करके शराब तस्करी करने वाले लोग ठेकदारों से ज्यादा कमाई कर रहे है और भारी भरकम टैक्स भर कर ठेकेदार बने लोग चोरों की तरह व्यापार करने पर मजबूर है जबकि गैर कानूनी रूप से शराब तस्करी करने वाले लोग धड़ल्ले से शराब तस्करी में संलिप्त है ।

इस बारे सूत्रों का कहना है कि अवैध शराब तस्कर एक विशेष तकनीक द्वारा शराब की बोतल की सील तोड़े बिना बोतल को खोल लेते है और शराब में इन्जैक्शन द्वारा सिप्रट व देसी शराब की मिलावट करते है इसी कारण यह लोग शराब के ठेको से कम दाम पर होम डिलीवरी द्वारा शराब बेच पा रहे है । ऐसे में इस बात की भी संभावना है कि इन द्वारा बेची जा रही शराब जहरीली होकर मदिरापान करने वाले व्यक्तियों के शरीर को नुकसान पहुँचा सकती है इस कारण इनके लीवर व किडनी पर असर कर भारी क्षति पंहुचा सकती है और कभी भी शहर में कोई बड़ा हादसा हो सकता है । परन्तु करनाल पुलिस प्रशासन मूकदर्शक हो सारा नजारा देख रहा है । इसके पीछे कारण ये माना जा रहा है कि करनाल पुलिस की मंथली के कारण पुलिस की मिली भगत से यह अवैध कारोबार जारी है ।

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।

फरीदाबाद में अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीनल सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207